Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

प्राचीन मगध के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नवादा: पुरातात्त्विक साक्ष्य, प्राचीन स्थल एवं अभिलेखीय परंपरा का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ. निगम भरद्वाज

निदेशक, न्यू होप आस कंसल्टेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, पटना

सारांश

बिहार का नवादा जिला प्राचीन मगध के ऐतिहासिक भूगोल का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इस क्षेत्र की ऐतिहासिक पहचान को समझने के लिए अभिलेखीय साक्ष्यों, पुरातात्त्विक अवशेषों, स्थापत्य, मूर्तिकला, धार्मिक स्थलों तथा स्थानीय परंपराओं का आलोचनात्मक अध्ययन आवश्यक है। वर्तमान नवादा जिले में स्थित अपसढ़, पार्वती पहाड़ी, सीतामढ़ी, हांडिया, गोणावाँ तथा नारद संग्रहालय से संबंधित पुरावस्तुएँ क्षेत्रीय इतिहास के विभिन्न पक्षों के अध्ययन की संभावना प्रस्तुत करती हैं। इनमें अपसढ़ का आदित्यसेन अभिलेख विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि यह उत्तर-गुप्तकालीन मगध के राजवंशीय इतिहास तथा धार्मिक निर्माण-कार्य से संबंधित प्रत्यक्ष अभिलेखीय सूचना प्रदान करता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य नवादा की प्राचीनता से संबंधित उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री का स्रोत-आधारित विश्लेषण करना तथा प्रमाणित ऐतिहासिक तथ्यों और धार्मिक जनश्रुतियों के बीच अंतर स्पष्ट करना है। अध्ययन में ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति अपनाई गई है। इसके अंतर्गत जॉन फेथफुल फ्लीट द्वारा संपादित *Corpus Inscriptionum Indicarum*, बिहार के अभिलेखों पर भगवंत सहाय का अध्ययन, उत्तर-गुप्तकालीन इतिहास पर आधुनिक शोध तथा जिला प्रशासन और पुरातत्त्व संबंधी संस्थागत स्रोतों को आधार बनाया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अपसढ़ का अभिलेख नवादा के इतिहास को सातवीं शताब्दी के आसपास के राजनीतिक और धार्मिक परिवर्तनों से जोड़ने वाला महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इसके विपरीत, जिले के कुछ अन्य धार्मिक स्थलों के प्राचीन इतिहास संबंधी दावों को सत्यापित करने के लिए विस्तृत पुरातात्त्विक सर्वेक्षण, स्थापत्य-अध्ययन और स्थल-विशिष्ट अभिलेखीय प्रमाणों की आवश्यकता है। निष्कर्षतः नवादा की प्राचीनता का

वैज्ञानिक अध्ययन तभी अधिक विश्वसनीय हो सकता है, जब अभिलेख, पुरावस्तुएँ, ऐतिहासिक साहित्य और स्थानीय परंपराएँ अपनी-अपनी प्रमाणिक सीमाओं के भीतर उपयोग की जाएँ।

बीज शब्द: नवादा, प्राचीन मगध, अपसढ़ अभिलेख, आदित्यसेन, उत्तर-गुप्त वंश, पुरातत्त्व, शिलालेख, धार्मिक विरासत, ऐतिहासिक भूगोल।

1. प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में मगध का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। वर्तमान बिहार के बड़े भूभाग में विस्तृत इस ऐतिहासिक क्षेत्र ने राजनीतिक केंद्रीकरण, धार्मिक आंदोलनों, नगरीकरण तथा बौद्ध और जैन परंपराओं के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजगृह, पाटलिपुत्र, नालंदा और गया जैसे केंद्रों के माध्यम से मगध का इतिहास भारतीय उपमहाद्वीप के व्यापक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों से जुड़ा रहा है।

वर्तमान नवादा जिला दक्षिणी बिहार में स्थित है और ऐतिहासिक दृष्टि से गया, राजगीर तथा दक्षिणी बिहार के अन्य क्षेत्रों के साथ इसके संबंधों का अध्ययन उपयोगी है। हालाँकि आधुनिक जिले की सीमाओं को प्राचीन राजनीतिक सीमाओं के समान नहीं माना जा सकता। वर्तमान नवादा की प्रशासनिक स्थापना 26 जनवरी 1973 को हुई थी, लेकिन यह तिथि केवल आधुनिक जिला-इतिहास से संबंधित है; इससे क्षेत्र की प्राचीनता निर्धारित नहीं होती।[1]

नवादा के इतिहास का अध्ययन करते समय एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न सामने आता है: क्या इसकी प्राचीनता का पुनर्निर्माण केवल धार्मिक परंपराओं और स्थानीय आख्यानों के आधार पर किया जा सकता है, अथवा इसके लिए अभिलेखीय तथा पुरातात्त्विक साक्ष्यों का स्वतंत्र परीक्षण आवश्यक है? इतिहासलेखन की वैज्ञानिक पद्धति दूसरे दृष्टिकोण को प्राथमिकता देती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि स्थानीय परंपराएँ महत्त्वहीन हैं, बल्कि यह कि सांस्कृतिक स्मृति और प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रमाण अलग-अलग प्रकार के स्रोत हैं।

इस संदर्भ में अपसढ़ का आदित्यसेन अभिलेख विशेष महत्त्व रखता है। यह नवादा क्षेत्र को उत्तर-गुप्तकालीन मगध के राजनीतिक इतिहास से जोड़ता है और राजवंशीय वंशावली, धार्मिक संरक्षण तथा निर्माण-गतिविधियों की जानकारी प्रदान करता है। दूसरी ओर, सीतामढ़ी, पार्वती पहाड़ी, हांडिया और गोणावाँ जैसे स्थल धार्मिक भूगोल, स्थापत्य और स्थानीय ऐतिहासिक स्मृतियों के अध्ययन के लिए उपयोगी हैं।

इस शोध का केंद्रीय तर्क है कि नवादा की प्राचीनता का संतुलित इतिहास लिखने के लिए अभिलेखीय प्रमाणों को प्राथमिकता देते हुए अन्य स्थलों की धार्मिक परंपराओं और पुरातात्त्विक संभावनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए।

2. शोध के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. नवादा जिले की प्राचीनता से संबंधित उपलब्ध ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक साक्ष्यों का परीक्षण करना।
2. अपसढ़ के आदित्यसेन अभिलेख के ऐतिहासिक महत्त्व का विश्लेषण करना।
3. पार्वती पहाड़ी, सीतामढ़ी, हांडिया तथा गोणावाँ जैसे स्थलों की ऐतिहासिक पहचान और धार्मिक परंपराओं का अध्ययन करना।
4. नवादा के इतिहास को प्राचीन मगध के व्यापक राजनीतिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में समझना।
5. प्रमाणित ऐतिहासिक तथ्यों, संभावित निष्कर्षों और स्थानीय जनश्रुतियों के बीच स्पष्ट अंतर स्थापित करना।
6. भविष्य के पुरातात्त्विक अनुसंधान तथा विरासत संरक्षण के लिए संभावित दिशाएँ प्रस्तुत करना।

3. शोध-पद्धति एवं स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें प्राथमिक अभिलेखीय स्रोतों, आधुनिक ऐतिहासिक अध्ययनों और सरकारी संस्थागत विवरणों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोतों में अभिलेख, दिनांकित स्थापत्य-अवशेष, उत्खनन में प्राप्त सामग्री तथा प्रमाणित पुरावस्तुएँ विशेष महत्त्व रखती हैं। द्वितीयक स्रोतों में अभिलेखों के प्रकाशित संस्करण, इतिहासकारों के अध्ययन, जिला जनगणना पुस्तिकाएँ और सरकारी विरासत-संबंधी विवरण शामिल हैं।

अभिलेखों के अध्ययन में भाषा, लिपि, वंशावली, राजकीय उपाधियों, धार्मिक दान और निर्माण-संबंधी उल्लेखों का विश्लेषण आवश्यक है। पुरातात्त्विक स्थलों के लिए वस्तुओं की प्राप्ति-स्थिति, स्थापत्य-शैली, निर्माण सामग्री तथा उत्खनन के स्तरों का अध्ययन किया जाना चाहिए।

इस शोध की एक सीमा यह है कि नवादा के सभी उल्लिखित स्थलों के लिए विस्तृत वैज्ञानिक उत्खनन-प्रतिवेदन और प्रमाणित काल-निर्धारण उपलब्ध सामग्री से समान रूप से सत्यापित नहीं किए जा सके हैं। इसलिए प्रत्येक स्थल के बारे में समान स्तर की ऐतिहासिक निश्चितता का दावा नहीं किया गया है।

3.1 स्रोतों की प्रमाणिकता

इस अध्ययन में ऐतिहासिक दावों को तीन श्रेणियों में रखा गया है:

- **प्रत्यक्ष अभिलेखीय या पुरातात्त्विक साक्ष्य:** किसी विशिष्ट ऐतिहासिक तथ्य का समर्थन करने वाली भौतिक सामग्री या अभिलेख।
- **दस्तावेजीकृत ऐतिहासिक सूचना:** सरकारी विवरण अथवा प्रकाशित अध्ययन में दर्ज सूचना, जिसकी सीमा मूल स्रोत की प्रकृति पर निर्भर करती है।
- **धार्मिक परंपरा एवं लोकस्मृति:** किसी स्थान से जुड़ी मान्यता, किंवदंती या मौखिक परंपरा, जो सांस्कृतिक इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है, लेकिन स्वतः किसी प्राचीन घटना का प्रमाण नहीं है।

यह वर्गीकरण धार्मिक परंपराओं के सांस्कृतिक महत्त्व को अस्वीकार नहीं करता। इसका उद्देश्य ऐतिहासिक निष्कर्षों को उपलब्ध प्रमाणों के अनुरूप रखना है।

4. नवादा का ऐतिहासिक भूगोल और मगध से संबंध

नवादा दक्षिणी बिहार में स्थित है। इसकी भौगोलिक स्थिति इसे गया, राजगीर और दक्षिणी बिहार के अन्य क्षेत्रों से जोड़ती है। प्राचीन इतिहास के अध्ययन में ऐसी भौगोलिक स्थिति का महत्त्व इसलिए है कि नदियाँ, पहाड़ियाँ, कृषि-योग्य भूमि और प्राकृतिक मार्ग बस्तियों के विकास को प्रभावित करते रहे हैं।

प्राचीन काल की राजनीतिक सीमाएँ आधुनिक जिलों की सीमाओं के समान नहीं थीं। अतः वर्तमान नवादा जिले के किसी पुरास्थल को प्राचीन मगध की राजनीतिक व्यवस्था से जोड़ने के लिए केवल उसकी वर्तमान भौगोलिक स्थिति पर्याप्त नहीं है। इसके लिए अभिलेखीय साक्ष्यों, ऐतिहासिक भूगोल और पड़ोसी क्षेत्रों के पुरातात्त्विक इतिहास का संयुक्त अध्ययन आवश्यक है।

मौर्य, गुप्त और उत्तर-गुप्त काल में मगध तथा आसपास के क्षेत्रों की राजनीतिक परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ। इन सभी कालखंडों को एक अखंड राजनीतिक व्यवस्था मानना ऐतिहासिक दृष्टि से उचित नहीं होगा। किसी

विशिष्ट स्थल पर किसी राजवंश का प्रत्यक्ष शासन स्थापित करने के लिए उस स्थल से संबंधित अभिलेख, सिक्के, स्थापत्य या अन्य स्वतंत्र साक्ष्य अपेक्षित हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में नवादा का महत्त्व यह है कि यहाँ के अभिलेखीय तथा सांस्कृतिक स्रोत मगध के इतिहास को उसके प्रसिद्ध नगरीय केंद्रों से आगे बढ़ाकर क्षेत्रीय स्तर पर समझने की संभावना प्रदान करते हैं।

5. अपसढ़ का आदित्यसेन अभिलेख

अपसढ़, जिसे अंग्रेज़ी में *Aphsad* अथवा *Apshad* लिखा जाता है, वर्तमान नवादा जिले का एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। यहाँ से प्राप्त आदित्यसेन का शिलालेख उत्तर-गुप्तकालीन इतिहास के अध्ययन में उल्लेखनीय स्थान रखता है।

जॉन फेथफुल फ्लीट ने इस अभिलेख को *Corpus Inscriptionum Indicarum*, खंड III में प्रकाशित किया। यह ग्रंथ 1888 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था।[2] अभिलेख संस्कृत भाषा में है और इसकी लिपि को सातवीं शताब्दी की कुटिल लिपि-परंपरा से संबंधित माना गया है। इसका काल-निर्धारण मुख्यतः लिपि-विज्ञान तथा ऐतिहासिक तुलना पर आधारित है; इसमें कोई स्पष्ट संवत्-तिथि अंकित नहीं है।[3]

अपसढ़ अभिलेख का महत्त्व इस बात में है कि यह उत्तर-गुप्त वंश के राजनीतिक इतिहास तथा धार्मिक निर्माण-गतिविधियों के संबंध में प्रत्यक्ष सूचना प्रदान करता है।

अभिलेख में उत्तर-गुप्त राजवंश की वंशावली दी गई है, जिसका आरंभ कृष्णगुप्त से होता है और जो आदित्यसेन तक पहुँचती है। यह वंशावली उत्तर-गुप्तकालीन मगध के इतिहास को समझने में सहायता देती है।[4]

वंशावली का ऐतिहासिक महत्त्व इस तथ्य में है कि इससे विभिन्न शासकों के बीच राजवंशीय संबंधों और राजनीतिक उत्तराधिकार का अध्ययन किया जा सकता है। हालाँकि राजकीय प्रशस्तियों में वंश की प्रतिष्ठा बढ़ाने के उद्देश्य से प्रशंसात्मक भाषा का प्रयोग होता था। इसलिए वंशावली तथा राजकीय उपलब्धियों से संबंधित विवरणों को अन्य अभिलेखों और आधुनिक ऐतिहासिक शोध के साथ मिलाकर पढ़ना चाहिए।

उत्तर-गुप्त शासकों के नाम में “गुप्त” शब्द का प्रयोग अपने-आप में इस बात का निर्णायक प्रमाण नहीं है कि वे शाही गुप्त वंश के प्रत्यक्ष वंशज थे। इस प्रश्न पर विचार करते समय राजवंशीय अभिलेखों, राजनीतिक संदर्भों और आधुनिक इतिहासलेखन का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है।[5]

अपसढ़ अभिलेख का एक प्रमुख पक्ष आदित्यसेन द्वारा विष्णु मंदिर के निर्माण का उल्लेख है। यह सूचना उत्तर-गुप्तकालीन मगध में वैष्णव धार्मिक परंपरा और राजकीय संरक्षण के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण है।

अभिलेख में किसी धार्मिक संरचना का उल्लेख उसके निर्माण या संरक्षण के ऐतिहासिक संदर्भ को समझने में सहायता करता है। किंतु वर्तमान में दिखाई देने वाली किसी विशिष्ट संरचना की पहचान उसी मंदिर के रूप में करने के लिए स्वतंत्र स्थापत्य और पुरातात्त्विक साक्ष्य आवश्यक हैं।

किसी मंदिर का पुनर्निर्माण या जीर्णोद्धार बाद के कालों में भी हो सकता है। इसी कारण अभिलेखीय उल्लेख और वर्तमान संरचना के बीच संबंध स्थापित करने के लिए निर्माण-शैली, सामग्री तथा पुरातात्त्विक संदर्भों का परीक्षण आवश्यक है।

अभिलेख में आदित्यसेन की माता श्रीमती से संबंधित धार्मिक शिक्षण-संस्था अथवा मठ के निर्माण का भी उल्लेख किया जाता है।[6] यह विवरण धार्मिक संस्थाओं के संरक्षण में राजपरिवार की महिलाओं की भूमिका को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

इससे यह संकेत मिलता है कि राजकीय धार्मिक संरक्षण केवल शासक तक सीमित नहीं था, बल्कि राजपरिवार के अन्य सदस्य भी संस्थागत निर्माण और दान-गतिविधियों में भूमिका निभा सकते थे।

हालाँकि इस उल्लेख के आधार पर संस्था के पाठ्यक्रम, विद्यार्थियों, संगठनात्मक व्यवस्था अथवा शैक्षिक गतिविधियों की विस्तृत प्रकृति निर्धारित नहीं की जा सकती। इन प्रश्नों के उत्तर के लिए अतिरिक्त अभिलेखीय और साहित्यिक स्रोतों की आवश्यकता होगी।

अभिलेख आदित्यसेन की पत्नी कोणादेवी द्वारा जलाशय के निर्माण का भी उल्लेख करता है।[7] यह सूचना धार्मिक दान और जल-संसाधन निर्माण के बीच संबंध की ओर संकेत करती है।

प्राचीन भारत में जलाशय, कुएँ और अन्य जल-संरचनाएँ कृषि, दैनिक जीवन तथा धार्मिक गतिविधियों के लिए महत्त्वपूर्ण थे। अपसढ़ अभिलेख का उल्लेख इस व्यापक परंपरा के क्षेत्रीय अध्ययन में उपयोगी है। लेकिन एक अभिलेख के आधार पर संपूर्ण मगध की जल-प्रबंधन व्यवस्था के बारे में निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा।

अपसढ़ अभिलेख में निश्चित संवत्-तिथि का अभाव है। इसका सातवीं शताब्दी ईस्वी का काल-निर्धारण मुख्यतः लिपि-विज्ञान और राजवंशीय इतिहास से संबंधित तुलनात्मक साक्ष्यों पर आधारित है।[3]

इस अंतर को स्पष्ट रखना आवश्यक है। अभिलेख में अंकित निश्चित तिथि और आधुनिक इतिहासकारों द्वारा निर्धारित अनुमानित तिथि एक समान नहीं होतीं।

इसी प्रकार अभिलेख के धार्मिक निर्माण-संबंधी उल्लेखों को संबंधित सभी वर्तमान अवशेषों की निश्चित तिथि के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए। ऐसे निष्कर्षों के लिए पुरातात्त्विक स्तरों, स्थापत्य-विश्लेषण तथा प्रकाशित उत्खनन-प्रतिवेदनों की सहायता लेनी आवश्यक है।

अपसढ़ से संबंधित पुरातात्त्विक सामग्री का अध्ययन अभिलेखीय इतिहास को भौतिक साक्ष्यों से जोड़ने की संभावना प्रस्तुत करता है। बिहार के अभिलेखों पर भगवंत सहाय के अध्ययन में अपसढ़ के टीले से प्राप्त स्टुको पैनलों का उल्लेख है, जिनमें रामायण से संबंधित दृश्यों की पहचान की गई है।[8]

इन अवशेषों का महत्त्व इस बात में है कि वे क्षेत्र में धार्मिक कला और स्थापत्य के अध्ययन का आधार बन सकते हैं। किंतु इन पैनलों की निश्चित तिथि, मूल स्थापत्य में उनकी स्थिति और अभिलेख में उल्लिखित मंदिर से उनका संबंध स्थापित करने के लिए संबंधित पुरातात्त्विक प्रतिवेदन का परीक्षण आवश्यक है।

इसलिए अपसढ़ को नवादा के इतिहास का एक प्रमुख अभिलेखीय केंद्र माना जा सकता है, जबकि उससे संबंधित प्रत्येक पुरातात्त्विक अवशेष की स्वतंत्र जाँच आवश्यक बनी रहती है।

6. पार्वती पहाड़ी और इंद्रशाल गुफा

नवादा जिले के काशीचक क्षेत्र में स्थित पार्वती पहाड़ी और उससे संबंधित इंद्रशाल गुफा का उल्लेख स्थानीय धार्मिक एवं पर्यटन-संबंधी विवरणों में मिलता है। इस स्थल को बौद्ध परंपरा से जोड़ने वाली मान्यताएँ प्रचलित हैं।[9]

इस स्थल के अध्ययन में दो प्रश्न महत्त्वपूर्ण हैं। पहला, पहाड़ी और गुफा की भौतिक संरचना की प्रकृति तथा संभावित काल क्या है? दूसरा, बौद्ध परंपरा में इस स्थल की पहचान किस प्रकार विकसित हुई?

किसी स्थल का बुद्ध के जीवन से संबंध स्थापित करने के लिए साहित्यिक परंपरा, अभिलेखीय प्रमाण, पुरातात्त्विक स्तर और स्थापत्य संबंधी साक्ष्यों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। केवल वर्तमान नाम या धार्मिक मान्यता के आधार पर स्थल को बुद्ध के जीवनकाल का प्रमाणित स्थान नहीं माना जा सकता।

फिर भी यह स्थल नवादा के धार्मिक भूगोल और स्थानीय बौद्ध स्मृति के अध्ययन के लिए उपयोगी है। भविष्य में व्यवस्थित सर्वेक्षण, गुफा-अध्ययन और पुरातात्त्विक परीक्षण से इसके उपयोग की अवधि तथा ऐतिहासिक प्रकृति के बारे में अधिक स्पष्ट निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

7. सीतामढ़ी: गुफा और रामायण परंपरा

सीतामढ़ी नवादा जिले का एक उल्लेखनीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल है। जिला प्रशासन के विवरण में यहाँ गुफा-सदृश संरचना तथा चट्टान से संबंधित स्थापत्य विशेषताओं का उल्लेख मिलता है। स्थानीय परंपरा इसे रामायण की सीता के वनवास से जोड़ती है।[10]

इस स्थल का अध्ययन करते समय भौतिक संरचना और धार्मिक मान्यता को अलग-अलग समझना आवश्यक है। गुफा या चट्टानी संरचना का अस्तित्व प्रत्यक्ष निरीक्षण से सत्यापित किया जा सकता है, जबकि सीता के निवास अथवा वनवास से उसका संबंध धार्मिक परंपरा का विषय है।

कुछ विवरणों में यहाँ की चट्टान की पॉलिश और मौर्यकालीन शैल-परंपरा से संभावित संबंध की चर्चा मिलती है। लेकिन केवल चिकनी सतह के आधार पर किसी संरचना को मौर्यकालीन घोषित करना उचित नहीं है। इसके लिए शैल-विश्लेषण, निर्माण तकनीक, औजारों के चिह्न, तुलनात्मक स्थापत्य और अन्य स्वतंत्र साक्ष्यों की आवश्यकता होगी।

सीतामढ़ी का महत्त्व इस बात में है कि यह पुरातात्त्विक परीक्षण और धार्मिक स्मृति के अध्ययन को एक साथ संभव बनाता है। इसके ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए स्थल-विशिष्ट सर्वेक्षण तथा वैज्ञानिक परीक्षण उपयोगी होंगे।

8. हांडिया का सूर्य मंदिर

नवादा जिले के नारदीगंज प्रखंड में स्थित हांडिया का सूर्य मंदिर स्थानीय धार्मिक विरासत का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है। जिला प्रशासन के विवरण में मंदिर के आसपास प्राप्त अवशेषों और स्थानीय धार्मिक मान्यताओं का उल्लेख मिलता है।[11]

इस स्थल से संबंधित कथाओं में मंदिर की स्थापना को अत्यंत प्राचीन काल से जोड़ा जाता है। लेकिन किसी विशिष्ट मंदिर की तिथि निर्धारित करने के लिए उसकी निर्माण-शैली, प्रतिमा-विज्ञान, निर्माण सामग्री, अभिलेखीय साक्ष्य और पुरातात्त्विक परतों का अध्ययन आवश्यक है।

सूर्य-पूजा भारतीय धार्मिक इतिहास की दीर्घकालीन परंपरा है। फिर भी किसी सामान्य धार्मिक परंपरा की प्राचीनता से किसी विशेष मंदिर की स्थापना की निश्चित तिथि निर्धारित नहीं की जा सकती।

हांडिया का ऐतिहासिक महत्त्व उसके स्थापत्य और धार्मिक उपयोग के व्यवस्थित अध्ययन में निहित है। यदि मंदिर परिसर में उपलब्ध पुरावस्तुओं की सूची बनाई जाए और उनके प्राप्ति-स्थल तथा निर्माण-काल का वैज्ञानिक परीक्षण किया जाए, तो मंदिर के विकास-क्रम के संबंध में अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

9. गोणावाँ जैन तीर्थ

नवादा नगर के निकट स्थित गोणावाँ जैन तीर्थ जिले की धार्मिक विरासत का महत्त्वपूर्ण अंग है। स्थानीय धार्मिक परंपरा इस स्थल को गौतम स्वामी से संबंधित बताती है।[12]

जैन परंपरा में गौतम स्वामी भगवान महावीर के प्रमुख गणधर के रूप में प्रतिष्ठित हैं। गोणावाँ की धार्मिक पहचान इस व्यापक जैन परंपरा से जुड़ी हुई है।

हालाँकि किसी धार्मिक व्यक्तित्व के आगमन, निवास या निर्वाण का दावा ऐतिहासिक रूप से स्थापित करने के लिए संबंधित साहित्यिक स्रोतों, अभिलेखों, स्थापत्य और पुरातात्त्विक सामग्री का तुलनात्मक परीक्षण आवश्यक है।

गोणावाँ के अध्ययन में वर्तमान मंदिर के स्थापत्य इतिहास और उससे जुड़ी प्राचीन धार्मिक स्मृति को अलग-अलग समझना उपयोगी होगा। मंदिर के निर्माण तथा जीर्णोद्धार संबंधी दस्तावेजों, पुराने चित्रों, दान-अभिलेखों और प्रतिमाओं की शैली का अध्ययन इस स्थल के इतिहास को अधिक स्पष्ट कर सकता है।

10. नारद संग्रहालय और पुरावस्तु विरासत

नवादा नगर स्थित नारद संग्रहालय जिले की पुरावस्तु विरासत के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण संस्थान है। जिला प्रशासन के विवरण में इसकी स्थापना 1974 में होने तथा यहाँ पाषाण प्रतिमाओं, मृद्भांडों और अन्य पुरावस्तुओं के संग्रह का उल्लेख मिलता है।[13]

संग्रहालय किसी क्षेत्र के इतिहास के पुनर्निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पुरावस्तुओं की उत्पत्ति, प्राप्ति-स्थल, सामग्री, शैली और काल-निर्धारण का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण उन्हें ऐतिहासिक अनुसंधान के लिए अधिक उपयोगी बनाता है।

नारद संग्रहालय की प्रतिमाओं और अन्य वस्तुओं का अध्ययन नवादा तथा आसपास के क्षेत्रों की धार्मिक कला और मूर्तिकला की परंपराओं को समझने में सहायता कर सकता है। हालाँकि किसी प्रतिमा को केवल शैलीगत समानता के आधार पर निश्चित तिथि देना पर्याप्त नहीं है। उसके प्राप्ति-स्थल, निर्माण सामग्री, अभिलेखीय विवरण और तुलनात्मक उदाहरणों की जाँच आवश्यक है।

भविष्य में संग्रहालय की सभी पुरावस्तुओं की डिजिटल सूची, उच्च-गुणवत्ता वाले चित्र, प्राप्ति-स्थल का विवरण और काल-निर्धारण संबंधी टिप्पणियाँ तैयार करना उपयोगी होगा। इससे जिले के पुरातात्त्विक इतिहास के लिए अधिक मजबूत आधार निर्मित हो सकता है।

11. लोकपरंपरा और प्रमाणित इतिहास

नवादा के अनेक धार्मिक स्थलों का संबंध रामायण, बौद्ध परंपरा और जैन धार्मिक स्मृतियों से जोड़ा जाता है। ये परंपराएँ स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक पहचान और धार्मिक जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

इतिहासलेखन में लोकपरंपराओं का अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि वे किसी स्थान की सांस्कृतिक स्मृति और उसके धार्मिक महत्त्व के विकास को समझने में सहायता करती हैं। लेकिन किसी परंपरा का ऐतिहासिक अध्ययन और उसकी धार्मिक सत्यता का प्रश्न अलग-अलग हैं।

उदाहरण के लिए, सीतामढ़ी का सीता से संबंध स्थानीय धार्मिक भूगोल का हिस्सा है। लेकिन इस संबंध को किसी निश्चित प्राचीन घटना का प्रत्यक्ष प्रमाण मानने के लिए स्वतंत्र ऐतिहासिक साक्ष्य आवश्यक होंगे। इसी प्रकार पार्वती पहाड़ी का बुद्ध से संबंध बौद्ध स्मृति के अध्ययन के लिए उपयोगी है, लेकिन बुद्ध के जीवनकाल से उसका प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करने के लिए अतिरिक्त प्रमाण अपेक्षित हैं।

अपसढ़ का मामला इस दृष्टि से अलग है, क्योंकि वहाँ से संबंधित अभिलेख में एक ऐतिहासिक राजवंश और उसके धार्मिक निर्माण-कार्य का उल्लेख मिलता है। इस प्रकार अभिलेखीय सामग्री का परीक्षण धार्मिक स्मृति से अलग पद्धति द्वारा किया जा सकता है।

अतः नवादा का इतिहास लिखते समय लोकपरंपराओं को न तो बिना परीक्षण के ऐतिहासिक तथ्य मानना चाहिए और न ही उनके सांस्कृतिक महत्त्व को अस्वीकार करना चाहिए। संतुलित दृष्टिकोण वही होगा जो प्रत्येक दावे का मूल्यांकन उसके स्रोत की प्रकृति के अनुसार करे।

12. निष्कर्ष

नवादा की प्राचीनता का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि किसी क्षेत्र के इतिहास को समझने के लिए अभिलेखीय प्रमाण, पुरातात्त्विक अवशेष, स्थापत्य, मूर्तिकला और स्थानीय धार्मिक परंपराओं का आलोचनात्मक समन्वय आवश्यक है।

इस अध्ययन में अपसढ़ का आदित्यसेन अभिलेख विशेष महत्त्व रखता है। यह उत्तर-गुप्तकालीन मगध के राजवंशीय इतिहास और धार्मिक निर्माण-गतिविधियों के अध्ययन के लिए प्रत्यक्ष अभिलेखीय आधार प्रदान करता है। अभिलेख में वंशावली, विष्णु मंदिर, धार्मिक शिक्षण-संस्था और जलाशय का उल्लेख नवादा क्षेत्र के राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास को समझने में उपयोगी है।

इसके विपरीत, पार्वती पहाड़ी, सीतामढ़ी, हांडिया और गोणावाँ जैसे स्थलों के इतिहास में धार्मिक परंपराओं और भौतिक साक्ष्यों के बीच स्पष्ट अंतर बनाए रखना आवश्यक है। इन स्थलों की सांस्कृतिक महत्ता निर्विवाद रूप से अध्ययन योग्य है, लेकिन उनकी निश्चित प्राचीनता स्थापित करने के लिए स्थल-विशिष्ट पुरातात्त्विक परीक्षण आवश्यक हैं।

नारद संग्रहालय की पुरावस्तुएँ नवादा के क्षेत्रीय इतिहास के पुनर्निर्माण में विशेष योगदान दे सकती हैं। यदि उनकी उत्पत्ति, काल-निर्धारण और संरक्षण-इतिहास का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण किया जाए, तो जिले की ऐतिहासिक विरासत के अध्ययन के लिए अधिक विश्वसनीय आधार तैयार किया जा सकता है।

अंततः नवादा को केवल प्राचीन मगध का एक भौगोलिक हिस्सा मानकर छोड़ देना उचित नहीं होगा। इसके अभिलेखीय स्रोत और सांस्कृतिक स्थल मगध के इतिहास को क्षेत्रीय स्तर पर समझने का अवसर प्रदान करते हैं। उपलब्ध प्रमाणों में अपसढ़ का अभिलेख विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जबकि अन्य स्थलों पर आगे का व्यवस्थित अनुसंधान आवश्यक है।

इस प्रकार नवादा की प्राचीनता का संतुलित अध्ययन प्रमाणित अभिलेखीय इतिहास, पुरातात्त्विक संभावनाओं और धार्मिक स्मृतियों को एक साथ रखते हुए किया जाना चाहिए। यही दृष्टिकोण स्थानीय इतिहास को अधिक वैज्ञानिक, विश्वसनीय और शोधपरक बनाने में सहायक होगा।

पाद-टिप्पणियाँ

1. District Administration, Nawada, "History," Government of Bihar, https://nawada.nic.in/history/। जिला स्थापना की तिथि आधुनिक प्रशासनिक इतिहास से संबंधित है, प्राचीन बस्ती की स्थापना से नहीं।
2. John Faithfull Fleet, *Corpus Inscriptionum Indicarum*, vol. 3, *Inscriptions of the Early Gupta Kings and Their Successors* (Calcutta: Government of India, Central Publications Branch, 1888), 205–8.
3. Fleet, *Corpus Inscriptionum Indicarum*, 205–8.
4. Fleet, *Corpus Inscriptionum Indicarum*, 205–8.
5. Suchandra Ghosh, "Later Guptas," *The Encyclopedia of Ancient History*, https://doi.org/10.1002/9781119399919.eahaa00571.
6. Bhagwant Sahai, *The Inscriptions of Bihar: From Earliest Times to the Middle of 13th Century A.D.* (Patna: Ramanand Vidya Bhawan, 1983), "The Aphsad Stone Inscription of Adityasena."
7. Fleet, *Corpus Inscriptionum Indicarum*, 205–8; Sahai, *The Inscriptions of Bihar*, "The Aphsad Stone Inscription of Adityasena."
8. Sahai, *The Inscriptions of Bihar*, "The Aphsad Stone Inscription of Adityasena."
9. District Administration, Nawada, "Places of Interest," Government of Bihar, https://nawada.nic.in/places-of-interest/।
10. District Administration, Nawada, "Places of Interest," https://nawada.nic.in/places-of-interest/।
11. District Administration, Nawada, "Places of Interest," https://nawada.nic.in/places-of-interest/।
12. District Administration, Nawada, "Places of Interest," https://nawada.nic.in/places-of-interest/।
13. District Administration, Nawada, "Places of Interest," https://nawada.nic.in/places-of-interest/।
14. Directorate of Archaeology, Government of Bihar, "Directorate of Archaeology," https://betastate.bihar.gov.in/yac/directorateofarchaeology.

ग्रंथ-सूची

प्राथमिक अभिलेखीय स्रोत

Fleet, John Faithfull. *Corpus Inscriptionum Indicarum*. Vol. 3, *Inscriptions of the Early Gupta Kings and Their Successors*. Calcutta: Government of India, Central Publications Branch, 1888.

Siddham: The Asian Inscription Database. "Aphsad Inscription of Adityasena." https://siddham.network/inscription/in00209/.

आधुनिक ऐतिहासिक अध्ययन

Ghosh, Suchandra. “Later Guptas.” *The Encyclopedia of Ancient History*. https://doi.org/10.1002/9781119399919.eahaa00571.

Sahai, Bhagwant. *The Inscriptions of Bihar: From Earliest Times to the Middle of 13th Century A.D.* Patna: Ramanand Vidya Bhawan, 1983.

सरकारी एवं संस्थागत स्रोत

Directorate of Archaeology, Government of Bihar. “Directorate of Archaeology.” https://betastate.bihar.gov.in/yac/directorateofarchaeology.

District Administration, Nawada. “History.” Government of Bihar. https://nawada.nic.in/history/.

District Administration, Nawada. “Places of Interest.” Government of Bihar. https://nawada.nic.in/places-of-interest/.

Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. *Census of India 2011: District Census Handbook, Nawada*. Directorate of Census Operations, Bihar. https://censusindia.gov.in/nada/index.php/catalog/295.